भगवत्पादाष्टकम्

हरिस्तुति रसनम् निर्मल हृदयम्
अच्युतलीलाकर्णित करणम्।
अद्भुतगानम् करुणानयनम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम्॥ १॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। उनका मुखकमल सदैव भगवान् हरि के गुणगान में लगा रहता है, उनका हृदय सारे कल्मष से रहित है और उनके कर्ण भगवान् अच्युत की लीलाओं का श्रवण करने में हमेशा व्यस्त रहते हैं। उनकी अद्भुत वाणी लाखों लोगों को मोहित करती है और उनके नेत्र करुणा से भरे हैं।

हरिगुरु शरणम् ध्रुवहंस पदम्
भगवद्ज्ञान विज्ञान प्रकाशम्।
अमलचरित्रम् वेदसुपुत्रम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम्॥ २॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। उन्होंने भगवान् हरि एवं गुरु की शरण पूर्णतया ले रखी है, वे परमहंस पद पर दृढ़ता से अवस्थित हैं और भगवान् के दिव्य ज्ञान तथा विज्ञान का प्रचार कर रहे हैं। उनका जीवन शुद्धतम है और वे वेदों के सुयोग्य पुत्र हैं।

प्रभुपाद प्रियम् प्रणतार्तिहरम्
परिभवदावानल तापहरम्।
साधनचतुरम् सद्गुण भरितम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम् ॥ ३॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। वे श्रील प्रभुपाद को अत्यन्त प्रिय हैं, वे शरणागत जीवों के दुखों को दूर करने वाले हैं और वे अपमान रूपी दावाग्नि को शान्त करने वाले हैं। वे भक्ति-साधना में निपुण हैं और वे सारे सद्गुणों के आगार हैं।

हरिदासवरम् हरिनामकरम्।
हरिपद पङ्कजलालसभृङ्गम्।
भवजलपोतम् हृदिचैत्य गुरुम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम् ॥ ४॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। वे भगवान् हरि के सारे सेवकों में श्रेष्ठ हैं, वे हरिनाम प्रदान करनेवाले हैं और वे भगवान् हरि के चरणकमलों में अनुरक्त भौंरे के समान हैं। वे संसार-सागर में नौका के समान हैं और वे हृदयस्थ परमात्मा के प्रतिरूप हैं।

ग्रन्थिकुठारम् ग्रन्थ प्रकाशम्
अम्बरचुम्बित आत्मविकासम्।
आश्रितवरदम् अक्षरसुखदम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम्॥ ५॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। वे हृदय की दृढ़ ग्रन्थि के लिए एक मजबूत कुल्हाड़ी के समान हैं, वे अनेक दिव्य साहित्य को प्रकाशित करते हैं और उनका आत्म-साक्षात्कार आकाश को छूने वाला है। वे शरणागत आत्मा को सब कुछ प्रदान करने वाले हैं और वे स्थायी आनन्द को प्रदान करने वाले हैं।

मायापुरचरम् वृन्दावनप्रियम्
रथयात्रोत्सव कीर्तन चतुरम्।
त्रिदण्डशोभितम् त्रिगुण वर्जितम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम॥ ६॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। वे मायापुर परिक्रमा में अत्यधिक रुचि रखते हैं, वृन्दावन का दिव्य घाम उन्हें बुहत प्रिय है और वे रथयात्रा महोत्सव के दौरान हरिनाम का कीर्तन करने में दक्ष हैं। वे त्रिदण्ड से सुशोभित हैं और भौतिक गुणों से रहित हैं।

गुरुवाक्यपरं गुरुकार्यरतम्
श्रीविग्रहसेवा परायणम्।
गूढमुक्तिचरम् गुरुबहिप्राणम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम्॥ ७॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। वे अपने गुरु के आदेशों का पालन करते हैं, वे अपने गुरु के कार्य में गहन आसक्ति रखते हैं और उन्हें अर्चाविग्रह की सेवा अत्यन्त प्रिय है। वे गुप्त रूप से मुक्ति के मार्ग में अग्रसर हो रहे हैं और उनके गुरु महाराज उनके लिए प्राण के समान हैं।

मधुरिपुदासम् मन्निस्तारकम्
माघवतिथि शुभ आविर्भावम्।
विष्णुजनहितम् शिष्यपोषकम्
प्रणमामि गुरु भगवत्पादम्॥ ८॥

मैं मेरे गुरुदेव श्रील भगवत्पाद को सादर प्रणाम करता हूँ। वे भगवान् मधुसूदन के सेवक हैं, वे मेरे रक्षणकर्ता हैं और वे एकादशी के शुभ दिन पर प्रकट हुए। वे सभी वैष्णवों के शुभचिन्तक हैं और अपने शिष्यों का पालन करने वाले हैं।

जय जय जय हो भगवत्पादम्।
जय जय जय गुरु भगवत्पादम्॥

श्रील भागवत्पाद! आपकी जय हो। आपकी जय हो। आपकी जय हो। हे गुरुदेव! आपकी जय हो।